महाकवि भास साहित्य में धार्मिक जीवनमूल्य

डॉ.पवन कुमार शर्मा

महाकवि भास वैदिक धर्म के समर्थक और ब्राह्मण धर्म के पोशक हैं। उनके रूपकों मे तप और वैदिक यज्ञ की प्रशस्ति इसी तथ्य का प्रमाण है। भास के काल में यज्ञ, तप, दान का महत्व निर्विवाद था। ये सभी सभी धार्मिक चर्चा के अंग थे दानशीलता का गुण तो बहुतों में होता है पर कर्णभारम के कर्ण के चरित्र में दान से किसी प्रतिफल की आशा न रखने का जो भाव है वह महत मानव मूल्य का प्रतिष्ठापक है वीर की शोभा केवल शौर्य प्रदर्शन में नहीं होती अपितु विनम्रता, संयम मर्यादा और सदाचरण उसे शोभित करते है भास धर्मसम्मत मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा के प्रति इतने सचेत है कि राक्षसी स्वभाव का परिहार करके व घटोत्कच के चरित्र को उन्नत रूप में प्रदर्शित करते है।

महाकवि भास के रूपकों में सद्वृत्ति वाला प्रत्येक चरित्र संस्कारित और धर्माप्रिय व्यक्तित्व वाला हैं इसीलिए पूजार्चन उसकी दैनिक चर्या का अंग हैं। वह चरित्र चाहे ब्रह्मचारी हो, ग्रहस्थ हो, वानप्रस्थी हो या फिर सन्यासी हो वह राजा हो या सामान्य प्रजाजन देवपूजा और देवार्चन के प्रति सभी भक्तिभाव समर्पित दिखाई देते हैं। प्रद्योत महासेन की कैद में भी वत्सराज उदयन देवार्चन नहीं भूलता। वह चतुर्दषी पूजन के निमित्त स्नान करता हैं प्रणामपूर्वक देवताओं की पूजा करता है।